17.

# पर्यायता, विलोमता, अनेकार्थता

— श्रीमती अमोला कोर्राम*

सेमेस्टर – I प्रश्नपत्र– IV (भाषा विज्ञान),
इकाई – 04 (अर्थ विज्ञान)
अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ में सम्बन्ध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ परिवर्तन

## पर्यायता

भाषा धीरे–धीरे विकास करती है और कुछ न कुछ बनती रहती है। भाषा में नए शब्द जन्म लेते हैं और पुराने शब्द मरते जाते हैं। शब्दों के मरने का अर्थ है ऐसे शब्द जो प्रयोग में नहीं आते हैं। जैसे– अघेला, छटॉक, गंडा आदि शब्द प्रचलन में नहीं है। इसलिए ये मृत शब्द हैं। जब हमें कोई नई चीज, नया विचार या नया भाव मिलता है, तब हम उसके लिए कोई नया शब्द गढ़ लेते हैं। इस तरह नए शब्दों का जन्म होता है। शब्दों के रुप में भी बदलते रहते हैं।

एक भाषा के कई पर्यायवाची शब्दों का अर्थ एक नहीं होता वरन् उनमें अंतर देखने को मिलता है। पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग अधिकतर कवियों के द्वारा किया जाता है।

**पर्याय विज्ञान**– यह अर्थ विज्ञान की महत्वपूर्ण शाखा है। पर्याय विज्ञान ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और तुलनात्मक सभी प्रकार का हो सकता है। पर्यायवाची शब्द एकार्थी होते हैं। उन्हें समनार्थी शब्द भी कहा जाता है। पर्याय विज्ञान के अनेक रुप भेद है परंतु मुख्य तीन है–

*जन्म : 05 मई 1971, नाहंदा, बालोद, माता : श्रीमती प्रेमबाई सेवता, पिता : सुखसिंह सेवता, पति : श्री वीरेन्द्र कुमार, शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी, भूगोल), बी. एड., सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय ई. वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा (छ.ग.), भारत, मो0 नं0 : 9993320162, मेल amolakorram@gmail.com

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
COLLEGE KORBA (C. G.)



**(1) वर्णनात्मक**– इसमें काल विशेष में प्रचलित भाषा के पर्यायों का अध्ययन किया जाता है। पर्याय कोषों का निर्माण इसी आधार पर किया गया है तथा प्रयोग की दृष्टि से पर्यायों के सूक्ष्म अर्थ भेद का वोध होता है।

**(2) ऐतिहासिक**– ऐतिहासिक पर्याय विज्ञान में किसी भाषा में समय–समय पर हुए पर्याय विषयक विकासों आदि का अध्ययन किया जाता है ।

**(3) तुलनात्मक**– दो या दो से अधिक भाषाओं का वर्णनात्मक या ऐतिहासिक दोनों ही रूपों में हो सकता है। इस प्रकार के अध्ययन बहुत कम हुए हैं।

पर्याय शब्दों के निम्नांकित भेद हो सकते हैं–

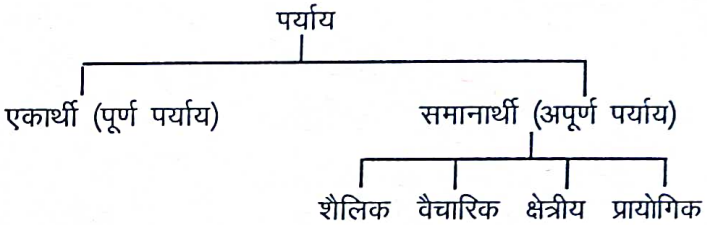


**1. एकार्थी (पूर्ण पर्याय)**– इन्हें पूर्ण पर्याय भी कहा जाता है। किसी भाषा के शब्द जो सभी संदर्भों में प्रयोग किए जाने पर समान अर्थ देते हैं। जिस शब्द का प्रयोग हो रहा है वह भाव को प्रकट करता है तो वह एकार्थी शब्द है। जैसे संतरा – नारंगी, भावमय – भावपूर्ण। जिन शब्दों को एकार्थी समझा जाता है, उनमें से 99 प्रतिशत एकार्थी नहीं होते। एकार्थी की पहचान है कि किसी भाषा में सारे संदर्भों में यदि बिना अर्थ परिवर्तन के एक शब्द के स्थान पर कोई दूसरा शब्द रखा जा सके तो वे दोनों एकार्थी या पूर्ण पर्याय कहे जा सकते हैं।

उदाहरण– मुश्किल और कठिन दो शब्द हैं, परंतु प्रयोग के आधार पर दोनों में अंतर है, उदाहरण– 'वह लड़का मुश्किल से पाँच वर्ष का होगा।' किन्तु इस वाक्य को यह नहीं कह सकते कि वह लड़का कठिन से पाँच वर्ष का होगा। इसी प्रकार, 'इस काम मे बहुत कठिनाई है।' को 'इस काम मे बहुत मुश्किलाई है', नहीं कह सकते। इस तरह हिन्दी में यह दोनों

GOVT. E.V.P.G. COLLEGE ★ KORBA ★